MR. BAIJU BAWRA
DOE
A.N.D. College

B.Ed - 1st year
Course - 7(a)
Unit - 1
Topic -
Montessory system

Montessory system

इटली में मैडम माण्टेसरी ने बालक की विशिष्ट आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर शिक्षा के क्षेत्र में कुछ अनुसंधान किये जो छोटे बच्चों के शिक्षण पद्धति के ऊपर आधारित थे और उन अनुसंधानों के आधार पर एक मनोवैज्ञानिक शिक्षण पद्धति को जन्म दिया जिसे उन्हीं के नाम के आधार पर एक मनोवैज्ञानिक शिक्षण पद्धति को जन्म दिया जिसे उन्हीं के नाम के आधार पर माण्टेसरी शिक्षा पद्धति कहा जाता है। इस पद्धति में बालक को स्वतंत्रता प्रदान की जाती है और उसके व्यक्तित्व-विकास पर विशेष ध्यान दिया जाता है इस पद्धति में खेल द्वारा शिक्षा प्रदान करने का प्रयत्न किया जाता है। एक बाल भवन की योजना की जाती है और छोटे बच्चों के भोजन, विश्राम, गोष्ठी और शारीरिक क्रिया के लिए पृथक रूप से व्यवस्था रहती है। प्रचुर मात्रा में शिक्षोपकरण होते हैं, जिनके माध्यम से शिक्षा दी जाती है।

भाषा की शिक्षा के संबंध में मैडम माण्टेसरी के विचार से लिखना, पढ़ने की अपेक्षा सरल है, इसलिए भाषा की शिक्षा लिखने से ही प्रारंभ होनी चाहिए। पहले बालक पेंसिल या कलम पकड़ना सीखता है फिर उपकरणों की सहायता से वह मांस पेशियों की साधना करता है।

और धीरे-धीरे आड़ी-तिरछी रेखाएँ खींचने का अभ्यास करता है। रेगमाल कागज पर कटे अक्षरों पर उँगलियाँ फेरता है। अक्षरों की आकृति में स्याही या खड़िया भरता है और शिक्षक द्वारा उच्चारित ध्वनि से उस आकृति का संबंध स्थापित करता है। इन दो महीनों में लेखन का विस्फोट हो जाता है। लिखना सीखने के बाद बालक पढ़ना सीखने में केवल पन्द्रह दिन लगते हैं। कागज या श्यामपट्ट पर लिखी हुई परिचित वस्तुओं को बोलने के लिए बालक को प्रोत्साहित किया जाता है। फ्लैश कार्ड और अन्य उपकरणों का भी प्रयोग किया जाता है। इन शिक्षण पद्धति में बालकों के लिए लकड़ी के उपकरणों का ही प्राय: प्रयुक्त किया जाता है

* माण्टेसरी पद्धति की सीमाएँ

माण्टेसरी शिक्षा पद्धति भारत जैसे देश के लिए एक महँगी शिक्षा पद्धति है। यह इस देश के अनुकूल नहीं है। यह केवल इन्द्रियों के प्रशिक्षण पर बल देती है यह कुछ कुछ अव्यावहारिक और अमनोवैज्ञानिक भी है। यह बात भी विवादास्पद है कि पढ़ने की अपेक्षा लिखना सरल है। फिर भी माण्टेसरी पद्धति की कुछ बातें भाषा शिक्षण में उपयोगी हैं और इसका प्रयोग कुछ सीमा तक बालकों की शिक्षा के लिए किया जा सकता है।